:- प्र मा ण प त्र :-

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि प्रा. सौ. छाया र. पाटील जी ने मेरे निर्देशन में " . रांगेय राघव के प्रगतिवादी उपन्यासों का मूल्यांकन " शीर्षक लघु शोध प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल्. उपाधि के लिए लिखा है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। मैं संपूर्ण लघु शोध प्रबंध को आद्योपान्त पढ़कर ही यह प्रमाण पत्र दे रहा हूँ।

सुनीलकुमार लवटे

(डॉ. सुनीलकुमार लवटे)
निर्देशक

कोल्हापूर :
२७ मई, १९८८।

..

अनुक्रमणिका

"डॉ. रांगेय राघव के प्रगतिवादी उपन्यासों का मूल्यांकन"

प्रथम अध्याय

प्रगतिवाद का सैद्धान्तिक अध्ययन १–३९

(अ) पृष्ठभूमि

(आ) प्रगति शब्द का उद्भव

(इ) प्रगति से आशय - विभिन्न विचारकों की दृष्टि में

(ई) प्रगतिवाद का स्वरुप

(उ) प्रगतिवाद की परिभाषा

(ऊ) प्रगतिवाद के सिद्धान्त

(ए) उपसंहार

द्वितीय अध्याय

हिंदी उपन्यास और प्रगतिवाद ४०–७३

(ओ) हिंदी उपन्यास का उद्भव और विकास

(औ) हिंदी उपन्यास में प्रगतिवाद का अविर्भाव

(अं) प्रगतिवादी उपन्यास साहित्य में डॉ. रांगेय राघव का आगमन

(अः) डॉ. रांगेय राघव के प्रगतिवादी उपन्यास

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय

डॉ. रांगेय राघव के उपन्यासों में प्रतिबिंबित प्रगतिवादी चिंतन ७४-१९४

(क) पृष्ठभूमि

(ख) सैद्धान्तिक विशेषताएँ

(१) मार्क्सवादी सिद्धान्तों का प्रभाव

(२) नास्तिकता का समर्थन

(३) शोषण विरोध

(४) रुढ़ि-विरोध

(ग) विश्वमानवतावादी सिद्धान्त

(१) राष्ट्रीय भावना

(२) मानवतावाद

(३) साम्प्रदायिक एकता

(घ) सामाजिक सिद्धान्त

(१) समसामयिक समस्याओं का चित्रण

(२) विषमता का विरोध

(३) शोषितों के प्रति हमदर्दी

(४) नारी स्वातंत्र्य की हिमायत

(ङ) साहित्यिक सिद्धान्त

(१) यथार्थ चित्रण

(२) सरल शैली

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय

डॉ.रांगेय राघव के प्रगतिवादी उपन्यास में चित्रित
सामाजिक समस्याएँ और उनका निदान ११५-१४८

(च) पृष्ठभूमि

(छ) विभिन्न समस्याएँ

(१) नारी समस्याएँ

(२) सह-शिक्षा

(३) विषमता

(४) भ्रष्टाचार

(५) युद्ध और शांति

(६) जाति प्रथा

(७) भिखारियों की समस्या

(८) नाजायज संतान

निष्कर्ष

पंचम अध्याय

उपसंहार १४९-१५४

परिशिष्ट

(१) सहायुयक ग्रन्थों की सूची

(२) डॉ.रांगेय राघव के प्रगतिवादी उपन्यास

(३) पत्र-पत्रिकाएँ

(४) डॉ. रांगेय पर उपलब्ध शोध सामग्री

प्र स्ता व ना

"डॉ. रांगेय राघव के प्रगतिवादी उपन्यासों का मूल्यांकन" मेरे लघु शोध प्रबंध का विषय है । शिवाजी विश्वविद्यालय की एम. फिल्. उपाधि के हेतु यह लघु शोध - प्रबंध प्रस्तुत किया जा रहा है । बात यह नहीं कि मेरा यह शोध-कार्य उपाधि हासिल करने के लिए किया गया है । दरअस्ल इस विषयपर पिछले कई वर्षों से मैं सोचती आ रही थी । विशेषत: एम.ए. की पढाई के बाद जब मैंने महाविद्यालयीन अध्यापन कार्य आरंभ किया था, तब से इस विषयपर जाने - अनजाने में मैं पढ़ती और सोचती रही थी । बीच में एक बार पीएच.डी. की उपाधि के हेतु मैं ने पंजीकरण भी किया था । उस समय मेरे अनुसंधान का विषय 'यशपाल और रांगेय राघव के उपन्यासों के नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन' था । इस अध्ययन और अनुसंधान के सिलसिले में मैं ने 'डॉ.रांगेय राघ' और 'यशपाल' के जितने उपन्यास हाथ लगे पढ डाले । उन दिनों अनजाने में 'डॉ. रांगेय राघव' के लेखन की ओर मैं 'यशपाल' की तुलना में आकर्षित हो गयी । वैसे तो दोनों भी वामपंथी विचारधारा के समर्थक साहित्यकार रहे हैं । परंतु डॉ.रांगेय राघव की विवेचना में जो भाव-प्रवणता थी वह सदा ही उनकी विवेचना में होनेवाले सैद्धान्तिक पक्षपर हावी होती रही । यही कारण है कि 'डॉ.रांगेय राघव' के लेखन की ओर मेरा रुझान बढता गया । घर - गृहस्थी की अनेकानेक विपरीतियों की वजह से पीएच.डी.का अध्ययन और अनुसंधान पूरा नहीं हो पाया । और वह करना भी असंभव लगने लगा । ऐसी स्थिति में भी अंदर ही अंदर डॉ.रांगेय राघव के उपन्यास मुझे निरंतर बेचैन बनाते रहे । इसी बेचैनी ने मुझे एम. फिल. की उपाधि के बहाने फिर गहराई से सोचने - समझने का सुअवसर प्रदान किया । मेरी खुश - किस्मती है कि इस बार मेरा संकल्प सिद्धि के सोपान तक पहुँच पाया ।

अनुसंधान के हेतु मैंने "डॉ.रांगेय राघव" के उपन्यासों को जब चुना उस समय अबतक अस्पर्श किसी नये पहलूपर खोज करने की कांक्षा थी । अबतक रांगेय राघव पर जो शोधकार्य हुआ उसमें डॉ.रांगेय राघव के कथाकार, उपन्यासकार

आलोचक के रूपों की तथा उनके साहित्य की प्रेरणाओं और प्रवृत्तियों की विवेचना होती रही । परंतु डॉ. रांगेय राघव ने अपने साहित्य की रचना जिन सिद्धान्तों पर की, उनकी कसौटियों पर इस साहित्य को परखनेका प्रयास अपवाद में ही हुआ । मेरा यह शोध कार्य इस अभाव की पूर्ति का विनम्र प्रयास है । अबतक "डॉ. रांगेय राघव" पर जो शोध-कार्य हुआ उसमें उनके मार्क्सवादी साहित्यकार का ही अधिकतर परामर्श लिया गया है । उपन्यास समीक्षा के प्रांगण में अधिकतर समीक्षकोंने उन्हें मार्क्सवादी उपन्यासकार की संज्ञा से अभिहित किया है । जब कभी मैं उनके उपन्यासों को पढती थी, और फिर उनकी समीक्षाओं को भी, उस समय मेरे मन में एक तरह का द्वंद्व एक तरह का प्रश्न-चिन्ह खडा होता था । क्या "डॉ. रांगेय राघव" सचमुच मार्क्सवादी साहित्यकार है ? इस प्रश्न के उत्तर में मैं ने जो जाँच-पडताल की उसमें मैं ने अनुभव किया, कि " डॉ.रांगेय राघव" जैसे कथा शिल्पी को वादों के खेमें में बिठाना उनके साथ अन्याय करना है । एक ही लेखक की विभिन्न कृतियों में विभिन्न वाद और विचारधाराएँ परिलक्षित होती है । ऐसी स्थिति में उसे वाद के कठघरे में खडा करना उसके साथ अन्याय करना होता है । मुझे याद आती है " कवि सुमित्रानंदन पंत" की । उनकी कविता में प्रकृतिवाद, प्रगतिवाद, छायावाद, अरविंद दर्शन कितने पहलू है । यह जरूरी नहीं कि उनको किसी एक प्रवृत्ति का कवि करार कर दिया जाये । ऐसी स्थिति में एक विशिष्ट पहलू से उनके लेखन का अध्ययन अनुसंधान किया जाये, तो संभव है कि हम लेखक की भूमिका , लेखक के कथ्य एवं लक्ष्य के साथ न्याय कर पाएँ । इसीलिए मैं ने " रांगेय राघव " के उपन्यासों को जब अनुसंधान का विषय बनाना चाहा, तब उनके प्रगतिवादी दृष्टिकोण को केन्द्र बनाना उचित समझा । स्वयं डॉ. रांगेय राघव किसी वाद के समर्थक बनना पसंद नहीं करते थे । उन्होंने कभी भी अपने आप को न तो मार्क्सवादी स्वीकार किया है न तो प्रगतिवादी । एक बात निश्चित है कि वे जीवन को निरंतर प्रगतिशील बनाना चाहते थे । प्रगतिवाद के प्रति उनके मन में आस्था थी । उनका विश्वास था कि प्रगतिवादी दृष्टिकोण को अपनाये बगैर मनुष्य का उत्थान संभव नहीं है । उनकी इस आस्था को कसौटी मानकर मैं ने उनके प्रगतिवादी उपन्यासों को अपने अनुसंधान का विषय बनाया । और प्रगतिवाद

की सीमा में ही उनके उपन्यासों का मूल्यांकन करने का निश्चय किया ।

डॉ. रांगेय राघव के जीवन और साहित्य के विभिन्न पहलूओं पर अबतक काफी अनुसंधान हुआ हैं । (देखिए - परिशिष्ट क्र. ४) काफी लिखा गया हैं और प्रकाशित भी हुआ हैं। अपने पठन-पाठन में मैं ने अनुभव किया कि उनके उपन्यासों का मूल्यांकन अधिकतर शिल्प-वैधानिक और सैद्धान्तिक रूप में ही हुआ हैं । विचार और चिंतन की कसौटियों पर उनके उपन्यासों का मूल्यांकन समय की माँग हैं । यह लघु शोध-प्रबंध इस माँग की पूर्ति का विनम्र प्रयास हैं ।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित हैं । प्रथम अध्याय में 'प्रगतिवाद' की संक्षिप्त जानकारी देते हुए, प्रगति शब्द के उद्भव तथा आशय को स्पष्ट किया हैं । उसके उपरांत विभिन्न विचारकों की दृष्टि से प्रगति का आशय स्पष्ट किया हैं । प्रगतिवाद का स्वरूप तथा उसकी विभिन्न सिद्धान्तों की चर्चा की हैं ।

द्वितीय अध्याय में हिंदी उपन्यास के उद्भव और विकास की चर्चा करते हुए हिंदी उपन्यास साहित्य में प्रगतिवाद के अविर्भाव को रेखांकित किया गया हैं । आगे चलकर प्रगतिवादी उपन्यास साहित्य में डॉ.रांगेय राघव जी का आगमन, कब और किस कृति से हुआ ,तथा उसकी सफलता,असफलता पर चर्चा करते हुए उनके प्रगतिवादी उपन्यासों की संक्षेप में विवेचना की हैं ।

तृतीय अध्याय में डॉ.रांगेय राघव जी के उपन्यासों में प्रगतिवाद की विभिन्न विशेषताएँ किस प्रकार प्रतिबिंबित हुयी हैं इसे विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया हैं । इनमें सैद्धान्तिक विशेषाताओं के अंतर्गत मार्क्सवादी सिद्धान्तों का प्रभाव, नास्तिक्ता का समर्थन, शोषाण विरोध तथा रूढि विरोध की चर्चा की हैं । विश्वमानवतावादी सिद्धान्तों में राष्ट्रीय भावना तथा मानवतावाद के बारे में लेखक के विचारों को प्रकट करते हुए सांप्रदायिक एकता का महत्व तथा उसकी आवश्यक्ता के बारे में होनेवाले लेखक के विचारों को स्पष्ट किया हैं ।

सामाजिक सिद्धान्तों के अंतर्गत समसामयिक समस्याओं के चित्रण लेखक ने किस प्रकार प्रस्तुत किए हैं, इसकी चर्चा करते हुए उसकी सफलता के बारे में विचार स्पष्ट किए हैं । विषमता का विरोध लेखक की प्रखर लेखनी से किसप्रकार व्यक्त हुआ हैं इसे दिखाते हुए शोषितों के प्रति होनेवाली हमदर्दी को स्पष्ट किया हैं । नारी स्वातंत्र्य की हिमायत के अंतर्गत नारी स्वातंत्र्य के प्रति लेखक की आस्था को विस्तार से प्रकट किया गया । डॉ.रांगेय राघव के उपन्यासों का मूल्यांकन साहित्यिक कसौटियोंपर पूर्ण रूप से करने के उद्देश्य से इन उपन्यासों में प्रतिबिंबित साहित्यिक सिद्धान्त तथा उनकी शैलीगत विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया हैं ।

चतुर्थ अध्याय में डॉ.रांगेय राघव के प्रगतिवादी उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याओं तथा उनके निदान की विवेचना की गयी हैं । डॉ.रांगेय राघव न सिर्फ साहित्यकार थे अपितु उनमें एक गंभीर चिंतक निरंतर विद्यमान रहा करता था । चिंतक के दायित्व को निभाने के हेतु उन्होंने अपने सभी उपन्यासों में इन समस्याओं का उल्लेख अनायास आ जाता हैं । वे इन समस्याओं के जरिए जीवन का यथार्थ चित्रण करते हैं । साथ ही साथ इन समस्याओं के समाधान का प्रयास भी । प्रस्तुत अध्याय में अनमेल विवाह, विधवा विवाह जैसी नारी समस्याओं का अध्ययन किया गया हैं । साथ ही साथ सह-शिक्षा, विषमता, भ्रष्टाचार ,युद्ध की विभिषिका, जाति-प्रथा भिखारियों का दुस्तर जीवन, नाजायज संतानों की अभिशिप्त जिंदगी जैसे कितने ही पहलू समस्याओं के रूप में उभर आते हैं ।

उपसंहार शीर्षक पंचम अध्याय में, प्रस्तुत शोध-कार्य की उपलब्धियों को रेखांकित करने का प्रयास किया गया हैं । इसमें डॉ.रांगेय राघव के प्रगतिवादी उपन्यासों के मूल्यांकन से प्राप्त तथ्यों को समग्र रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया हैं । एक तरह से यह अध्याय इस शोध-कार्य का सार तत्व हैं ।

परिशिष्ट के अंतर्गत उन सारी सामग्री एवं संदर्भ सूत्रों को सूची-बद्ध किया गया हैं । जिनकी वजह से यह शोध-कार्य सिद्धि तक पहुँच पाया । इस में

उल्लेखनीय हैं, डॉ.रांगेय राघव के प्रगतिवादी उपन्यास तथा डॉ.रांगेय राघव पर किया गया शोध कार्य ।

इस शोध कार्य में निर्देशक के रूप में डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी की सहाय्यता मिली है । मैं उनकी ऋणी हूँ ।

इस शोध कार्य को संपन्न करने के लिए अनेक संदर्भ ग्रंथ तथा अन्य आवश्यक पुस्तकों की सहाय्यता, शिवाजी विश्वविद्यालय ,महावीर महाविद्यालय तथा राजाराम महाविद्यालय, कोल्हापुर ,श्रीमती कस्तुरबाई वालचंद महाविद्यालय, विलिंग्डन कॉलेज,सांगली तथा कन्या महाविद्यालय, इचलकरंजी के ग्रंथालयों से प्राप्त हुई हैं । मैं वहाँ के ग्रंथपालों एवं प्राचार्यो की ऋणी हूँ । उनकी अमूल्य सहायता के लिए हृदय से धन्यवाद प्रकट करती हूँ । श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, कोल्हापुर के सचिव प्राचार्य अभयकुमार साळुंखे तथा कन्या महाविद्यालय इचलकरंजी की प्राचार्या सौ. विजया पाटील, जी की मैं ऋणी रहूँगी, जिन्होंने मुझे एम.फिल. करने की सुविधा दी हैं । महावीर महाविद्यालय, कोल्हापूर के प्राचार्य तथा गुरुवर्य डॉ.बी.बी. पाटील जी ने उचित मार्गदर्शन तथा सहायता की हैं , उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ । इन सभी की मैं पुनश्च हृदय से आभार प्रदर्शन करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य मानती हूँ ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का टंकलेखन श्री बालकृष्ण रा.सावन्त जी ने किया हैं । कम समय तथा कार्य-व्यस्तता के बावजूद भी उन्होंने इस लघु शोध प्रबन्ध का कार्य पूर्ण करके अमूल्य सहायता की हैं । उनके हार्दिक सहयोग के लिए कृतज्ञता भाव व्यक्त करते हुए हृदय से धन्यवाद प्रकट करती हूँ ।

मेरे पूज्य पिताजी स्वर्गीय श्री बसवराज जी.वाली जी ने सतत प्रेरणा देकर मुझे शिक्षा तथा अनुसंधान की ओर प्रवृत्त किया था । मैं आज जो हूँ वह केवल उनके आशिर्वाद से ही, इसका मुझे पूरा अहसास हैं । मेरी विनम्र धारणा में मेरा हर प्रयास उनके आशीर्वाद का फल हैं ।

कोल्हापुर

२७ मई , १९८८ :

Cpatil

(सौ. छाया ए.पाटील)